61

क्रूस पर मृत्यु की ओर ले जाने वाले पग

(26:1-16)

बहुत सम्भावना है कि 21:23-25:46 की सभी घटनाएं दुख भोगने के सप्ताह के गुरुवार के दिन हुईं। अपना सामना किए जाने पर अपने आलोचकों को उत्तर देते हुए यीशु ने मन्दिर में उपदेश दिया था (21:23-22:46)। उसने लोगों की भीड़ को फरीसियों के कपट से सावधान रहने को कहा था (23:1-39)। मन्दिर में से निकलकर वह जैतून के पहाड़ पर अपने प्रेरितों के साथ चला गया। उसने उन्हें यरूशलेम के विनाश के विषय में और आकाश के बादलों में अपनी वापसी के बारे में बताया (24:1-25:46)। जैतून के उपदेश के समापन से यीशु की सार्वजनिक शिक्षा देने की बात चिह्नित हो गई। एक अपवाद के साथ,[1] अध्याय 26 की घटनाएं स्पष्टतया दुख भोगने के सप्ताह के बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार के दिन ही हुई। यीशु की हत्या का यहूदी अगुओं का षड्यन्त्र यहूदा की सहमति से प्रभु को उनके हाथ सौंपने के साथ-साथ (26:14-16) बुधवार के दिन ही हुआ होगा (26:1-5)।

इस अध्याय के साथ हम मत्ती की पुस्तक के अन्तिम भाग में आते हैं जिसमें मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने का वर्णन है (अध्याय 26-28)। इन घटनाओं में सुसमाचार का चरम आता है यानी यह बताता है कि यीशु ने ''लोगों का उनके पापों से उद्धार'' कैसे करना था (1:21)। वचन इस बात पर जोर देता है कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु परमेश्वर की श्रेष्ठ इच्छा के अनुसार और वह भी सही समय पर, यीशु ने क्रूस को वेदी में बदलकर जिस पर उसने संसार के पापों के लिए अपने आपको बलिदान करना था, विनम्रता से मरने के लिए दे दिया (26:2, 18, 54, 56)। परमेश्वर की सनातन मंशा के विचार से यह किसी त्रासदी, पराजय का नहीं बल्कि पूरा होने और विजय का है, कहानी यीशु की विजयी पुनरुत्थान तक पहुंचने से भी पहले।[2]

#1: यीशु की हत्या करने का षड्यन्त्र (26:1-5)

[1]जब यीशु ये बातें कह चुका, तो अपने चेलों से कहने लगा। [2]तुम जानते हो, कि दो दिन के बाद फसह का पर्ब्ब होगा; और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए पकड़वाया जाएगा। [3]तब महायाजक और प्रजा के पुरनिए काइफा नाम महायाजक के आंगन में इकट्ठे हुए। [4]और आपस में विचार करने लगे कि यीशु को छल से पकड़कर मार डालें। [5]परन्तु वे कहते थे, कि पर्ब्ब के समय नहीं; कहीं ऐसा न हो कि लोगों में बलवा मच जाए।

आयत 1. जब यीशु ये बातें कह चुका, यीशु की शिक्षाओं के भागों को समाप्त करने के लिए मत्ती द्वारा बार-बार इस्तेमाल की जाने वाली अभिव्यक्ति है (7:28; 11:1; 13:53; 19:1)। यहां पर शास्त्रियों और फरीसियों को डांटने (अध्याय 23) और जैतून के उपदेश (अध्याय 24; 25) को शिक्षा के एक भाग के रूप में इकट्ठे रखा गया। अंग्रेज़ी बाइबल NASB में विशेषण शब्द **सब** का इस्तेमाल सम्भवतया अध्याय 23 से 25 में कही गई यीशु की सब बातों के लिए है। यह इस बात की ओर भी ध्यान दिलाता है कि यीशु ने सिखाने की अपनी सेवकाई बन्द कर दी।

आयत 2. अपनी शिक्षा की समाप्ति के साथ यीशु ने चौथी (और अन्तिम) बार अपने प्रेरितों को अपनी आने वाली मृत्यु के बारे में बताया (देखें 16:21; 17:22, 23; 20:17-19)। **फसह** के भोज वाली रात, जो केवल **दो दिन** बाद आने वाली थी, उसने **क्रूस पर चढ़ाए जाना** था। यीशु को मालूम था कि यहूदी अगुवे उसका प्राण लेने की चालें चल रहे हैं और उसने समझ लिया था कि पिता की छुटकारे की योजना को पूरा करने का उसका समय आ पहुंचा था (26:18)।

आयत 3. यीशु के अपने प्रेरितों को सिर पर मण्डराती अपनी मृत्यु की बात बताने के समय, यहूदी अगुवे योजना बना रहे थे कि वे कम से कम गड़बड़ी के साथ उस पर कैसे हाथ डाल सकते हैं। **काइफा** के महल में उनकी सभा खुले **आंगन** (*aulē*) में हुई होगी जिसके इर्द-गिर्द महल की इमारतें बनी हुई थीं। परन्तु *aulē* का इस्तेमाल कई बार "महल" के ही विस्तार के लिए किया जाता है।[3] अधिकतर अंग्रेज़ी अनुवादों में महल के विस्तार का पक्ष लिया जाता है।

यह महासभा की कोई आधिकारिक सभा नहीं बल्कि एक औपचारिक इकट्ठा होना था। चाहे **महायाजक और प्रजा के पुरनियो** का नाम तो दिया गया है पर तीसरे समूह अर्थात शास्त्रियों का कोई उल्लेख नहीं है, जो इस संगठन का भाग थे (16:21 पर टिप्पणियां देखें)। लियोन मौरिस ने लिखा है कि शास्त्रियों और फरीसियों का न होना इस बात का संकेत है कि यीशु "का सबसे अधिक विरोध कुलीन यहूदी तन्त्र द्वारा अर्थात उन लोगों द्वारा किया जाता था जिन्हें राजनैतिक वास्तविकताओं में और रोमी अधिराज बनने में दिलचस्पी थी।"[4]

महायाजक का पद मूल में हारून की संतान के सबसे बड़े बेटे को दिया जाता था, परन्तु मसीह के समय तक यह पद याजकों में सबसे अधिक बोली लगाने वाले को मिलता था।[5] ई.पू. से 67 ईस्वी तक कम से कम उस पर अठाइस लोगों ने काम किया।[6] अन्नास को सीरिया के हाकिम कुरेनियुस द्वारा नियुक्त किया गया था, [7] और उसने यह पद ईस्वी 6-15 तक सम्भाला। उसे अधिकारी वलेरियुस ग्रेटुस द्वारा जो पुंतियुस पिलातुस के स्थान पर बैठा था, ने पद से उतार दिया गया था। अन्नास के पांच पुत्र एलियाज़र, योनातान, थियोफिलुस, मथियास और अनानुस भी पहली सदी में अलग-अलग समयों पर इस पद पर बैठे थे। अन्नास को यहूदियों द्वारा उसके अपने लम्बे जीवन काल में बाद में सही महायाजक माना गया था।[8]

अन्नास के दामाद काइफा (यूहन्ना 18:13) को वलेरियुस ग्रेटुस द्वारा ईस्वी 18 में महायाजक नियुक्त किया गया था। वह ईस्वी 36 तक इस पद पर बना रहा, जब पुन्तियुस पिलातुस[9] के स्थान गद्दी पर बैठने वाले डिडेरियुस द्वारा उसे पद से उतार दिया गया। उसका कार्यकाल अभूतपूर्व ढंग से बहुत लम्बा था। काइफा को रोमियों द्वारा आधिकारिक महायाजक माना जाता था परन्तु यहूदी लोगों द्वारा अभी भी अन्नास के अधिकार को माना जाता था (लूका 3:2; प्रेरितों 4:6)।

1990 में मज़दूरों को यरूशलेम में एक प्राचीन कब्र की गुफा मिली, जिसमें कई अस्थिपात्र

(या हड्डियों की डिब्बियां) थे। सबसे स्पष्ट पात्र में एक शिलालेख था, जिस पर लिखा है ''काइफा का पुत्र यूसुफ।'' इसमें लगभग साठ वर्ष की उम्र में मरने वाले एक व्यक्ति सहित छह लोगों की हड्डियां हैं। जोसेफस ने महायाजक को ''यूसुफ काइफा''[10] बताया है। इस कारण कुछ लोगों का यह मानना है कि वह अस्थिपात्र और अस्थियां उस की थीं।[11]

आयत 4. काइफा के महल में सभा करते हुए महायाजकों और पुरनियों ने **विचार किया कि यीशु को छल से पकड़कर मार डालें।** यीशु को मार डालने का उनका निर्णय अभी नहीं लिया गया था, बल्कि यह बहुत पहले तय कर लिया गया था (12:14; 21:38, 45, 46; यूहन्ना 5:18; 7:1, 19, 25; 8:37, 40; 11:53)। उन्होंने फैसला ले लिया था कि उसकी गिरफ्तारी और मृत्यु कैसे होगी। ''छल'' (*dolos*) शब्द का अर्थ आम तौर पर ''धोखा'' या ''चालाकी'' होता है। NIV में इसे ''किसी गुप्त ढंग से'' अनुवाद किया गया है जबकि NKJV में ''चालाकी से'' है। यीशु की गिरफ्तारी अन्ततः उसके प्रेरितों में से एक यहूदा के विश्वासघात के द्वारा पूरी हुई (26:14–16, 47–56)।

आयत 5. यहूदी अगुओं को पता था कि वे उसे **बलवा** किए बिना आम लोगों के बीच से नहीं ले जा सकते, जिस कारण उन्होंने उसे पकड़ने का षड्यन्त्र बड़े ही गुपचुप ढंग से रचा। सुझाव दिया गया है कि **पर्व के समय नहीं** वाक्यांश का अर्थ है कि ''फसह की भीड़ों के सामने नहीं''[12] (देखें लूका 22:6)। आखिर यदि यहूदी अगुवे यीशु की गिरफ्तारी के लिए पर्व तक प्रतीक्षा करते रहते तो उनके हाथ से अवसर निकल सकता था, क्योंकि वह उनकी पकड़ से बचकर गलील में लौट जाता।

फसह के समय यहूदी लोग अपनी राष्ट्रीय अपेक्षाओं के साथ यरूशलेम में इकट्ठा होते और मसीहा के सम्बन्ध में उनकी उम्मीदें बहुत बढ़ जातीं। पर्व मूसा के समय मिस्र की दासता से इस्राएल को छुड़ाने का स्मरण कराता था। पहली सदी में बहुत से यहूदी लोग मसीहा की राह देख रहे थे कि वह आकर उन्हें रोमी दमन से छुड़ाएगा और राज करेगा। वे अपनी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता को फिर से पाकर राजा दाऊद जैसा शासन अपने ऊपर चाहते थे। इनमें से कुछ यहूदियों को उम्मीद थी कि यीशु उन्हें विजय दिलाएगा, जैसा कि विजयी प्रवेश में उनके चिल्लाने से पता चलता है (21:9 पर टिप्पणियां देखें)। यहूदी अगुओं के लिए इस फसह की भीड़ में बलवे से बचना आवश्यक था।

#2: यीशु का अभिषेक किया जाना (26:6-13)

[6]जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में था। [7]तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमोल इत्र लेकर उसके पास आई, और जब वह भोजन करने बैठा था, तो उसके सिर पर उण्डेल दिया। [8]यह देखकर, उसके चेले रिसियाए और कहने लगे, इसका क्यों सत्यानाश किया गया? [9]यह तो अच्छे दाम पर बिककर कंगालों को बांटा जा सकता था। [10]वह जानकर यीशु ने उन से कहा, स्त्री को क्यों सताते हो? उस ने मेरे साथ भलाई की है। [11]कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदैव न रहूंगा। [12]उस ने मेरी देह पर जो इत्र उण्डेला है, वह मेरे गाड़े जाने के लिए किया है। [13]मैं तुम से सच कहता हूं,

कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके इस काम का वर्णन भी उसके स्मरण में किया जाएगा।

आयत 6. मत्ती रचित सुसमाचार में यीशु के दिनों को हमेशा कालक्रम के अनुसार नहीं दिया गया। यहां पर वह उन घटनाओं को समझाने के लिए विस्तार देता है, जो कुछ दिन पहले घटी थीं। **यीशु बैतनिय्याह** में आया था (21:17 पर टिप्पणियां देखें)। वह "फसह से छह दिन पहले" आ गया था और "वहां उन्होंने उसके लिए भोजन तैयार किया" था (यूहन्ना 12:1, 2; देखें 26:2)। यह भोजन शनिवार शाम को (जो यहूदी गणना के अनुसार रविवार का आरम्भ था) और अगले दिन विजयी प्रवेश से पहले हुआ होगा (21:1 पर टिप्पणियां देखें)।

इस भोजन में कम से कम सत्रह लोगों ने भाग लिया। यीशु बारहों प्रेरितों, लाज़र और उसकी बहनों, मरियम और मारथा के साथ वहां था। मेज़बान **शमौन** जिसे **कोढ़ी** कहा गया है, वहां था। उसे यीशु ने कोढ़ से चंगा कर दिया होगा, नहीं तो वह समाज से अलग रह रहा होता, जैसा कि व्यवस्था में कोढ़ियों को आज्ञा थी (लैव्यव्यवस्था 13:45, 46)। उसने अपनी चंगाई के धन्यवाद में यह भोजन दिया हो सकता है। अनुमान लगाया जाता है कि वह यीशु के तीन मित्रों का पिता था[13] और लाज़र के प्राण लौटाने के लिए अपना अत्यधिक आभार भी व्यक्त कर रहा था।

आयत 7. मत्ती और मरकुस चाहे स्त्री की पहचान नहीं बताते, परन्तु यूहन्ना 12:3 संकेत देता है कि यह लाज़र की बहन मरियम थी। मरियम **संगमरमर के पात्र में बहुमोल इत्र लेकर** यीशु के पास आई। "संगमरमर का पात्र" (*alabastros*) सुराहीनुमा "बोतल" होगी (NKJV)। यह शीशी पत्थर पर की गई सुन्दर कारीगरी वाली थी और इसमें भारत में पाए जाने वाले जटामासी के पौधों की जड़ों से निकला तेल "जटामासी का बहुमूल्य इत्र" (यूहन्ना 12:3; NIV) था।[14] मरकुस 14:5 कहता है कि "यह इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचा जा सकता था।" इतनी राशि एक मज़दूर की पूरे साल की कमाई के बराबर होनी थी (18:28; 20:2; 22:19 पर टिप्पणियां देखें)।

उस शीशी का मुंह तोड़ने के बाद (मरकुस 14:3), **जब वह भोजन करने बैठा था,** तो उस स्त्री ने [इत्र] **उसके सिर पर उण्डेल दिया।** "उण्डेल" के लिए यूनानी शब्द (*katacheō*) का अर्थ मूलतया "नीचे गिराना" है। मरियम ने उसके सिर और उसके पांवों का अभिषेक किया होगा, क्योंकि यूहन्ना का विवरण कहता है कि उसने "इत्र लेकर यीशु के पांवों पर डाला और अपने बालों से उसके पांव पोंछे" और यह कि "इत्र की सुगंध से घर सुगंधित हो गया" (यूहन्ना 12:3)। यहूदी दावतों में अतिथियों का तेल के साथ अभिषेक किया जाना आम बात थी (भजन संहिता 23:5; लूका 7:46)।

इस कहानी को लूका 7:36–50 वाली कहानी से नहीं उलझाना चाहिए जिसमें एक अनाम पापिन स्त्री ने यीशु के पांवों का अभिषेक किया और अपने बालों से उन्हें पोंछते हुए उसके पांवों पर रो रही थी। वह अभिषेक बैतनिय्याह वाली मरियम की घटना से बहुत पहले हुआ था। लूका वाली घटना शमौन के घर में जो एक फरीसी था, गलील में हुई थी (लूका 7:36)। उस जमाने में "शमौन" आम लोगों का नाम होता था। पवित्र शास्त्र में इस नाम के कम से कम दस लोग बताए गए थे और जोसेफस द्वारा बीस और शमौनों का उल्लेख किया गया है।[15] उस अवसर पर

यीशु की आलोचना एक पापिन स्त्री को उसे छूने देने के कारण हुई थी (लूका 7:39)।

इस वचन में मरियम की आलोचना फिज़ूलखर्ची के कारण हुई (26:8, 9)। लूका के विवरण वाली पापिन स्त्री से कहा गया था, "तेरे पाप क्षमा हुए। ... तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया, कुशल से चली जा" (लूका 7:48-50)। यहां पर यीशु ने मरियम की सराहना की और उसकी आलोचना करने वालों को डांटा (26:10-13)।

आयतें 8, 9. जब मरियम ने यीशु का अभिषेक किया तो **चेले रिसिया** गए, क्योंकि उनके लिए यह **सत्यानाश** था। "परन्तु कोई-कोई अपने मन में रिसियाकर कहने लगे कि इस इत्र का क्यों सत्यानाश किया?" (मरकुस 14:4)। कई प्रेरित इस आलोचना में शामिल हो सकते हैं परन्तु उकसाने का काम यहूदा इसकरियोती ने ही किया लगता है (यूहन्ना 12:4)। उसने कहा, "यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को क्यों न दिया जाए?" (यूहन्ना 12:5)।[16] परन्तु उसने यह इसलिए नहीं कहा था "कि उसे कंगालों की चिंता थी, परन्तु इसलिए कि वह चोर था। और उसके पास उनकी थैली रहती थी और उसमें जो कुछ डाला जाता था वह उसे निकाल लेता था" (यूहन्ना 12:6)।

यहूदा प्रभु और प्रेरितों के उसके समूह का खजांची था और वह उनके पास के थोड़े बहुत पैसों में से चुरा लेता था। यह इस बात को साबित करता है कि यहूदा एक लालची आदमी था जिसने अपने धन को बढ़ाने से किसी बात को रुकावट नहीं बनने देना था। चोरी करने वाला व्यक्ति मित्र के साथ विश्वासघात करने सहित झूठ बोलने और अन्य पाप कर सकता है।

आयत 10. यहां पर **यीशु** ने अपने प्रेरितों की आलोचना को **जाना** (देखें 12:15; 16:7, 8; 22:18)। हो सकता है कि उसे अलौकिक रूप में यह जानकारी हो या उसने उनकी बातें सुनी हों (देखें मरकुस 14:4, 5)।

यीशु ने मरियम के कामों का बचाव और उसके आलोचकों को डांट यह कहते हुए लगाई थी, "**स्त्री को क्यों सताते हो? उस ने मेरे साथ भलाई की है।**" अनुवादित शब्द "भलाई" के यूनानी शब्द (*kalos*) का अर्थ "बाहर से सुन्दर" (देखें RSV; NIV; NCV; JNT) हो सकता है पर यहां लगता है कि इसका संकेत "अच्छा" या "भला" है।

आयत 11. यीशु ने अपने सुनने वालों को याद दिलाया कि सहायता करवाने के लिए **कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहेंगे**। उसके मन में व्यवस्थाविवरण 15:11 हो सकता है: "तेरे देश में दरिद्र तो सदा पाए जाएंगे, इसलिये मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं कि तू अपने देश में अपने दीन-दरिद्र भाइयों को अपना हाथ ढीला करके अवश्य दान देना।" तौभी उनके बीच यीशु का समय सीमित था। "[उसके] मत्ती [मरियम के] प्रेम का कार्य अब भक्ति के उन कार्यों के ऊपर प्राथमिकता ले लेता है जो उसके जाने के बाद जारी रहने आवश्यक हैं (तुलना मरकुस 2:19-20)।"[17] यीशु प्रेरितों की आलोचना निर्धनों के लिए उनकी चिंता के कारण नहीं कर रहा था। यीशु के सब चेलों की तरह उन्हें उनकी चिंता होनी चाहिए थी।

आयत 12. यीशु ने आगे कहा, "**उस ने मेरी देह पर जो इत्र उण्डेला है, वह मेरे गाड़े जाने के लिए किया है।**" यहूदियों में दफ़नाए जाने के समय लाश को सुगंधों और मसालों के साथ मलमल में लपेटने का रिवाज़ था। यीशु के मरने के बाद उसकी देह को अरिमतियाह के यूसुफ और निकुदेमुस ने जल्दी-जल्दी में मलमल और मसालों में लपेट दिया था (यूहन्ना

19:40)। रविवार सुबह-सुबह कब्र पर आने वाली स्त्रियां और मसालें लेकर आई थीं जो शायद दफ़नाने के लिए देह को और अच्छी तरह तैयार करने के लिए था (मरकुस 16:1)। इस अवसर पर मरियम ने वह किया था जो वह यीशु की मृत्यु से पहले कर सकती थी।

क्या मरियम का विश्वास था कि यीशु मरने वाला है? उसने कई अवसरों पर अपनी मृत्यु की भविष्यवाणियां की, परन्तु उसके चेलों को इसकी वास्तविकता को स्वीकार करने में समय लगा। यह भी हो सकता है कि उसे इस समय आत्मिक मामलों में प्रेरितों से अधिक समझ हो।[18] एक और सम्भावना है कि उसने यीशु के प्रेम के कार्य को उसके नहीं, बल्कि अपने ज्ञान के अर्थ में बताया। यीशु ने उस स्त्री का बचाव यह कहते हुए किया कि उसने ''भलाई की'' थी। रब्बी लोग निर्धनों के लिए सहायता के कार्य और दफ़नाने के लिए लाश को तैयार करने के दो भलाई के कामों का महत्व देखते थे। दफ़नाने की तैयारी को अधिक प्राथमिकता दी जानी चाहिए, क्योंकि ''यह दान देने की तरह किसी भी समय नहीं बल्कि एक आवश्यक समय पर ही हो सकता था और इसलिए भी कि इसमें धन का अव्यैक्तिक दान नहीं बल्कि व्यक्तिगत सेवा शामिल थी।''[19]

आयत 13. मरियम उस इत्र को रखकर बाद में किसी प्रियजन की देह पर मलने के लिए रख सकती थी। परन्तु यदि वह इसकी प्रतीक्षा करती तो वह सुनहरी अवसर को जो उसे मिला था खो देती। उसने यह अनुग्रहपूर्ण काम किया इस कारण यीशु ने कहा कि **सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा,** वहां उसे याद किया जाएगा।

#3: यीशु को पकड़वाने की यहूदा की सहमति (26:14-16)

[14]तब यहूदा इस्करियोती नाम बारह चेलों में से एक ने महायाजकों के पास जाकर कहा, [15]यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे? उन्होंने उसे तीस चान्दी के सिक्के तौलकर दे दिए। [16]और वह उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूंढने लगा।

आयत 14. स्त्री (मरियम) जिसने यीशु का अभिषेक किया, के स्नेहपूर्ण समर्पण के बाद **बारहों चेलों में से एक** प्रेरित द्वारा पकड़वाए जाने की बात आती है। यहां मत्ती रचित सुसमाचार में **यहूदा इस्करियोती** का नाम केवल दूसरी बार आता है। पहली बार 10:4 में मिलता है, जहां यीशु ने प्रेरितों को बुलाया था। उस आयत में उसे ''यहूदा इस्करियोती जिसने उसे पकड़वा भी दिया'' कहा गया है (देखें 26:24, 25, 46, 48; 27:3)। किसी को याद रखने का कितना खतरनाक ढंग है!

महायाजकों के साथ यहूदा की मुलाकात मरियम के उपहार से प्रेरित भी हो सकती है। अपने लोभ के कारण (यूहन्ना 12:6) वह क्रोधित हो गया; और क्रोध में वह यीशु की फटकार को सह न सका (26:10-13)। यूहन्ना 12:4 संकेत देता है कि यहूदा मरियम की आलोचना करने के समय *पहले ही* यीशु को पकड़वाने पर था।[20] पकड़वाने के यहूदा के और सम्भावित इरादों में राज्य की यीशु की अवधारणा के साथ उसकी असहमति (शारीरिक के बजाय इसका आत्मिक होना) और रोम के विरुद्ध विद्रोह में यीशु को जबर्दस्ती डालने की इच्छा शामिल है।

आयत 15. इस दृश्य को ''व्यवसाय की नीरस पेशकश'' कहा गया है।[21] यहूदा का

लालच इस बात से पता चलता है कि वह महायाजकों से यह पूछने के लिए गया कि वे यीशु को **पकड़वा** देने पर [उसे] क्या देंगे। यहूदी अगुवे तो यीशु को पकड़ना ही चाहते थे और उसे मार डालना चाहते थे (26:3-5)। इस कारण हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि जब उसके अपनों में से ही किसी ने उसे उन्हें सौंप देने की पेशकश की तो वे कितना ''प्रसन्न'' हुए होंगे (देखें मरकुस 14:11; लूका 22:5)।

उत्तर में इन लोगों ने यहूदा को **चांदी के तीस सिक्के** देने की पेशकश की। व्यवस्था के अधीन यहूदा को पेशकश की गई राशि किसी दास की कीमत के बराबर थी, जिसे किसी जानवर ने मार दिया था (निर्गमन 21:32)। यह जकर्याह नबी की भविष्यवाणी में बताई गई कीमत भी थी (जकर्याह 11:12, 13)। उसके रूप में चरवाहे को चांदी के तीस शेकेल दिए जाते हैं जबकि सुसमाचार के मत्ती के विवरण में यीशु (अच्छा चरवाहा) को इतनी कीमत में बेचा जाता है।[22] दोनों ही दृश्यों में चरवाहे को उसके लोगों द्वारा ठुकराया जाता है। जकर्याह ने न केवल यीशु के पकड़वाए जाने में लगने वाले धन की राशि बताई बल्कि उसने यह भी कहा कि इसका इस्तेमाल कुम्हार का खेत मोल लेने के लिए किया जाएगा। मत्ती ने बाद में इस भविष्यवाणी के पूरा होने की बात की और कहा कि इस अशुद्ध धन से खरीदा गया कुम्हार का खेत परदेशियों की कब्रगाह बन गया (27:6-10)।

यूनानी शब्द (*histēmi* से) **तौलकर** का इस्तेमाल जकर्याह 11:12 में भी हुआ है (LXX)। छठी शताब्दी ई.पू. में जिस समय नबी ने लिखा था उस समय मोहर वाले सिक्के जिन पर उसकी कीमत की गारंटी दी गई होती थी, चलन में नहीं थे, इस कारण तराजू में चांदी को तोला जाना आवश्यक होता था।[23] मत्ती ने शायद जकर्याह की बात सुनाने के लिए *histēmi* शब्द का इस्तेमाल किया चाहे पहली सदी में सिक्के केवल गिने जाते थे। ''तौलकर'' के बजाय कई अंग्रेज़ी संस्करणों में ''गिना गया'' (TEV; NIV; NKJV) या ''चुकाया'' (NRSV; NJB; CEV) है।

आयत 16. इसके बाद से यहूदा अपने सौदे को पूरा करने और **यीशु** को उसके शत्रुओं को सौंपने **का अवसर ढूंढ़ने लगा**। यहूदा और महायाजकों की मुलाकात स्पष्टतया दुख भोगने के सप्ताह के बुधवार के दिन हुई। उसके लिए यह अवसर डेढ़ दिन बाद आया।

✧✧✧✧✧ सबक ✧✧✧✧✧

''उसके स्मरण में'' (26:6-13)

बैतनिय्याह में यीशु के अभिषेक की कहानी हमें बताती है कि केवल एक काम किसी दूसरे के जीवन को बहुत प्रभावित कर सकता है। जिस स्त्री ने यीशु का अभिषेक किया, मत्ती ने उसका नाम नहीं दिया, परन्तु यूहन्ना उसे लाज़र की बहन मरियम के रूप में परिचित करवाता है (यूहन्ना 12:2, 3)। उसके करुणामय काम पर पांच अवलोकन किए जा सकते हैं।

1. *उसने यीशु को एक महंगा उपहार दिया।* वह इत्र 300 दीनार का था, जो लगभग एक साल की मज़दूरी के बराबर था (मरकुस 14:5)। यह कीमती उपहार सचमुच में एक बड़ा बलिदान था।

2. *उसने कुछ भी अपने पास नहीं रखा।* उसने पूरा इत्र डालने के लिए संगमरमर की शीशी को तोड़ दिया (मरकुस 14:3)–''आधा शेर शुद्ध जटामासी का'' (यूहन्ना 12:3; NIV)।

3. *उसने उपहार स्वयं दिया।* यीशु को उपहार किसी दूसरे के हाथ भेजने के बजाय मरियम ने स्वयं उसके ऊपर तेल उण्डेला। यह बहुत ही व्यक्तिगत था।

4. *उसने दूसरों की आलोचना सह ली।* चेले, जिन्हें उसके कामों का समर्थन करना चाहिए था उसे ''सत्यानाश'' जैसा बता रहे थे। निश्चय ही उनकी कठोर बातों से उसे गहरा दुख हुआ।

5. *यीशु द्वारा उसकी सराहना की गई।* उसने उसके आलोचकों का मुंह बंद करके उसके कामों को अपने गाड़े जाने की तैयारी के काम बताया। इसके अलावा उसने घोषणा की कि ''सारे जगत में जहां यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके इस काम का वर्णन भी उसके स्मरण में किया जाएगा'' (26:13)।

क्या दयालुता के हमारे कामों के लिए हमें स्मरण किया जाएगा?

डेविड स्टिवर्ट

यहूदा इस्करियोती (26:14-16, 20-25, 47-50)

यहूदा इस्करियोती का नाम बदनाम है। जब भी संसार के सबसे बड़े विश्वासघातियों का नाम लिया जाता है तो उसका नाम याद करके उससे घृणा की जाती है। कोई अपने बेटे का नाम यह नहीं रखना चाहेगा। तौभी इसका अर्थ है ''महिमा'' और इब्रानी भाषा में इसे ''यूदाह'' कहा जाता है (उत्पत्ति 29:35)। यहूदा मसीह का विश्वासघाती कैसे बन गया? क्या वह भावना में बहने वाला और सनकी व्यक्ति था, जिसने अपने स्वामी को विनाश के पथ से मोड़ने का प्रयास किया? क्या वह हालात का मारा हुआ था, जो उसके बस से बाहर थे या परमेश्वर के उपाय का एक मोहरा था?

जीवन की रोटी पर यीशु के उपदेश के बाद (यूहन्ना 6:48-58) पतरस ने कहा, ''हे प्रभु, ... अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं'' (यूहन्ना 6:68)। यीशु ने उत्तर दिया, ''क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुना? तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है'' (यूहन्ना 6:70)। यूहन्ना ने समझाया कि यह उसने ''शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के विषय में कहा था, क्योंकि वही जो बारहों में से एक था, उसे पकड़वाने को था'' (यूहन्ना 6:71)। लगता है कि पतरस को यह पक्का पता था कि सभी प्रेरितों का विश्वास उसकी तरह ही है कि यीशु ''परमेश्वर का पवित्र जन'' था (यूहन्ना 6:69)। यदि यहूदा मानता था कि यीशु ही मसीह है तो वह अपने प्रभु को कैसे मरवा सकता था?

यहूदा के बारे में हमारे पास कई प्रश्न होंगे जिनका उत्तर नहीं है परन्तु पवित्र शास्त्र में उसके जीवन के कई तथ्य बताए गए हैं।

पहला, यीशु के पकड़वाए जाने की बेशक भविष्यवाणी हुई थी, परन्तु हम जानते हैं कि यहूदा छुटकारे की परमेश्वर की योजना में अपनी मर्जी के खिलाफ नहीं पाया गया था (भजन संहिता 41:9; 55:12-14; प्रेरितों 1:25)।

दूसरा, यीशु द्वारा चुने जाने के समय यहूदा शैतान नहीं था; परन्तु बाद में वह शैतान का काम करने को तैयार हो गया। उसने शैतान को अपने जीवन पर काम करने की अनुमति देकर अपने

आपको लोभ के सामने झुका दिया (देखें यूहन्ना 13:27)।

तीसरा, यहूदा को प्रभु की ओर से आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ वैसे ही मिली थी जैसे अन्य प्रेरितों को, और उसने इसका इस्तेमाल भी किया होगा (लूका 9:1, 10)। उसने यीशु के आश्चर्यकर्म भी देखे होंगे, सो उसे उसकी वास्तविक पहचान पर कोई भ्रम नहीं था। उसके शत्रुओं के हाथ यीशु को बेचने के समय उसे मालूम था कि यीशु कौन है।

चौथा, यहूदा में लोभ की समस्या थी। सभी पापों की तरह यह पाप भी मन में से ही निकला था (15:19)। उसे स्वर्ग में धन जमा करने के बजाय इस संसार में धन जमा करने की अधिक चिंता थी। मरियम पर उसके ज़बानी हमले का कारण उसका लालच ही था (यूहन्ना 12:4-6)। उसके थोड़ी देर बाद वह प्रभु को पकड़वाने के लिए चला गया (26:14, 15)।

यहूदा उसके पकड़वाने का इरादा किए हुए था। वह गतसमनी में भीड़ को ले गया जहां उन्हें यीशु मिल गया (26:47)।

यहूदा ने कहां गलती की (26:14-16, 20-25, 47-50)

यहूदा ने अपने जीवन में कई गलतियां की जिनसे हमें बचना चाहिए:

1. उसने धन में अपनी अत्यधिक रुचि पर काबू नहीं पाया।
2. उसने मसीह की चेतावनियां सुनी थीं परन्तु उनकी ओर ध्यान नहीं दिया।
3. उसने मिले सुनहरी अवसरों का लाभ नहीं उठाया।
4. उसे अपने आस पास होने वाली घटनाओं की गहराई की समझ नहीं थी।
5. उसने निराशा और संदेह को अपने जीवन पर नियन्त्रण करने दिया।
6. उसने अपने आपको दूसरों के ऊपर छोड़ दिया।

टिप्पणियां

[1]यीशु का अभिषेक (26:6-13) अध्याय 26 की अन्य घटनाओं से कुछ दिन पहले हुआ। मत्ती ने इस विवरण को शायद यहां पर यीशु का अभिषेक करने वाली स्त्री के उदार समर्पण से यहूदा के जो उसके चुने हुए प्रेरितों में से था विश्वासघात को अलग करने के लिए रखा (26:14-16)। [2]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14-28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 749. [3]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 150. [4]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 644. [5]टालमुड *योमा* 18ए; *येबामोथ* 61ए। [6]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 141. [7]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 18.2.1. [8]वही, 20.9.1. [9]वही, 18.2.2; 18.4.3. [10]वही, 18.2.2.

[11]*जौंडरवन इलस्ट्रेटड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 160 में माइकल जे. विलकिंस, ''मैथ्यू।'' अपनी चर्चाओं के साथ विलकिंस ने काइफा के अस्थिपात्र का एक फोटो भी दिया। [12]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 293; देखें रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुऐट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 238. [13]यह हो सकता है कि पूरा परिवार उसी घर में रहता हो। सुसमाचार के लूका के विवरण में मारथा को अपने घर में यीशु को खाना देते हुए दिखाया गया है (लूका

10:38, 40)। इस अवसर पर यूहन्ना रचित सुसमाचार संकेत देता है कि मारथा शमौन के घर में ये खाना दे रही थी (यूहन्ना 12:2)। [14]विलकिंस, 161. [15]लुईस, 142. [16]अपनी चीजें बेचकर उससे मिले पैसे निर्धनों को देने की बात धनवान जवान हाकिम को यीशु के निर्देश में सुनाई देती है (19:21)। [17]*डिक्शनरी ऑफ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैकनाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 12 में जोएल बी. ग्रीन एंड होली ई. हिरोन, ''एनॉयंटिंग।'' [18]वह अपने भाई लाज़र को जिलाने के कारण बढ़ते तनाव को भी देख सकती होगी (यूहन्ना 12:9–11)। [19]हेयर, 294. [20]NASB में यही विचार दिया गया है। परन्तु अन्य संस्करण अधिक सामान्य हैं। उदाहरण के लिए NIV में यहूदा को ''जिसने बाद में यीशु के साथ विश्वासघात करना था'' बताया गया है (यूहन्ना 12:4)।

[21]आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 363. [22]हेयर, 294. [23]जॉयस जी. बाल्डविन, *हग्गई, ज़करयाह, मलाकाय: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1972), 184.